नाम की महिमा

"भगवन्नाम के प्रति विश्वास को
दृढ़ करने हेतु प्रामाणिक श्लोकों का संग्रह"

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।

–श्री मधुसूदन बापूजी

भूमिका

कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः । द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।।

सत्ययुग में विष्णु का ध्यान करने से, त्रेतायुग में यज्ञ करने से तथा द्वापर युग में भगवान् के चरणकमलों की सेवा करने से, जो फल प्राप्त होता है, वही कलियुग में केवल हरे कृष्ण महामंत्र का कीर्तन करके प्राप्त किया जा सकता है। **(श्रीमद् भागवतम्– १२.३.५२.)**

प्रत्येक युग में भगवद् प्राप्ति के अलग–अलग मार्ग हैं लेकिन कलियुग में भगवद् प्राप्ति अत्यन्त सरल तथा सुलभ है क्योंकि केवल भगवन्नाम का जप करने से तथा हरि नाम संकीर्तन करने मात्र से बड़ी सुलभता से भगवन्न प्राप्ति हो सकती है। भगवान् श्रीकृष्ण का नाम जपने तथा कीर्तन के लिए किसी देश, काल, परिस्थिती, विधि–विधान या समय का कोई बन्धन नहीं है। भगवन्नाम तथा स्वयं भगवान् में कोई भी अन्तर नहीं है, इसलिए कलियुग में श्रीकृष्ण नाम की महिमा अनन्त है। **''नाम की महिमा''** नामक इस पुस्तिका के द्वारा हम आपके हृदय में नाम के प्रति प्रेम, श्रद्धा तथा विश्वास को जागृत करने का प्रयास कर रहे हैं ताकि आप भी भगवन्नाम का आश्रय लेकर भगवान् श्रीकृष्ण के गोलोक धाम में जा सकें।

श्री मधुसूदन बापूजी

इति षोडशकं नाम्नां कलिकल्मषनाशनम्।

नातः परतरोपायः सर्ववेदेषु दृश्यते।।

इति षोडशकलावृतस्य जीवस्य आवरणविनाशनम्।

ततः प्रकाशते परंब्रह्म मेघापाये रविरश्मिमण्डलीवेति।

पुनर्नारदः पप्रच्छ। भगवन्! कोऽस्य विधिरिति?

स होवाच नास्य विधिरिति।

सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन् ब्रह्मणः सलोकतां समीपतां सरूपतां सायुज्यातामेति।

इस प्रकार सोलह नामों वाला यह जो 'महामंत्र' है, वह कलि के कल्मषों को सम्पूर्ण रूप से विनष्ट करने वाला है। सभी वेदों में इससे श्रेष्ठ और कोई भी साधन नहीं दिखता है। जीव के सामने, परब्रह्म उसी प्रकार से प्रकाशित हो जाते हैं, जैसे बादलों के विनष्ट होने पर सूर्य की किरणों का समुदाय प्रकाशित हो जाता है। (कलिसंतरणोपनिषद्)

कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान्गुणः ।
कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं व्रजेत् ।।

हे राजन्, यद्यपि कलियुग दोषों का सागर है, फिर भी इस युग में एक अच्छा गुण है, केवल हरे कृष्ण महामंत्र का कीर्तन करने से मनुष्य भवबंधन से मुक्त हो जाता है और दिव्य धाम को प्राप्त होता है। (श्रीमद् भागवतम् १२.३.५१)

अज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तमश्लोकनाम यत् ।
सङ्कीर्तितमघं पुंसो दहेदेधो यथानलः ।।

जिस तरह अग्नि सूखी घास को जला कर राख कर देती है, उसी तरह भगवन्नाम, चाहे वह जाने अनजाने में उच्चारण किया गया हो, मनुष्य के पापकर्मों के सभी फलों को निश्चित रूप से जलाकर राख कर देता है। (श्रीमद् भागवतम् ६.२.१८)

साङ्केत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा ।
वैकुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः ।।

जो व्यक्ति भगवन्नाम का कीर्तन करता है उसे तुरंत अनगिनत पापों के फलों से मुक्त कर दिया जाता है। भले ही उसने यह कीर्तन अप्रत्यक्ष रूप में, परिहास में, संगीतमय मनोरंजन के लिए अथवा उपेक्षा भाव से क्यों न किया हो। इसे शास्त्रों में पारंगत सभी विद्वान पंडित स्वीकार करते हैं। (श्रीमद् भागवतम् ६.२.१४)

खाइते शुइते यथा तथा नाम लय ।
काल–देश–नियम नाहि, सर्व सिद्धि हय ।।

देश या काल से निरपेक्ष जो व्यक्ति खाते तथा सोते समय पवित्र नाम का कीर्तन करता है वह सर्व सिद्धि प्राप्त करता है। (चैतन्य चरितामृत अंत्यलीला २०.१८)

सर्वेषामप्यघवतामिदमेव सुनिष्कृतम् ।
नामव्याहरणं विष्णोर्यतस्तद्विषया मतिः ।।

भगवान् विष्णु के पवित्र नाम का केवल कीर्तन करने से पापी व्यक्ति भगवान् का ध्यान आकृष्ट करते हैं इसलिए वे विचार करते हैं कि, ''इस व्यक्ति ने मेरे नाम का उच्चारण किया है, इसलिए मेरा कर्तव्य है कि उसे सुरक्षा प्रदान करूँ।'' (श्रीमद् भागवतम् ६.२.१०)

मन्त्रतस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्हवस्तुतः ।
सर्वं करोति निश्छिद्रमनुसङ्कीर्तनं तव ।।

मंत्रों के उच्चारण तथा कर्मकाण्ड के पालन में त्रुटियाँ हो सकती हैं। देश, काल, व्यक्ति तथा सामग्री के विषय में भी कमियाँ रह सकती हैं। किन्तु भगवन्! यदि आपके पवित्र नाम का कीर्तन किया जाए तो हर वस्तु दोषरहित बन जाती है। (श्रीमद् भागवतम् ८.२३.१६)

तस्मात्सङ्कीर्तनं विष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम् ।

महतामपि कौरव्य विध्दध्यैकान्तिकनिष्कृतम् ।।

भगवन्नाम का कीर्तन बड़े से बड़े पापों के फलों को भी उन्मूलित करने में सक्षम है। इसलिए संकीर्तन आंदोलन का कीर्तन सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सबसे शुभ कार्य है। कृपया इसे समझने का प्रयास करें। (श्रीमद् भागवतम् ६.३.३१)

सहस्र नाम्नां पुण्यानां त्रिर् आवृत्य तु यत्फलं ।

एकावृत्त्य तु कृष्णस्य नामैकम् तत् प्रयच्छति ।।

जो सुकृति भगवान् विष्णु के सहस्र नामों का तीन बार जप करने से प्राप्त होती है, वही फल कृष्ण के नाम का एक बार उच्चारण करने से प्राप्त होता है। (ब्रह्माण्ड पुराण)

कलि काले नाम रूपे कृष्ण अवतार ।

नाम हैते हय सर्व जगतनिस्तार ।।

इस कलियुग में, कृष्ण का पवित्र नाम, हरे कृष्ण महामंत्र, कृष्ण का अवतार है। मात्र हरिनाम के कीर्तन द्वारा समस्त ब्रह्माण्ड का उद्धार होगा। (चैतन्य चरितामृत आदिलीला १७.२२)

कृष्णनाम–महामंत्रेर एइ त स्वभाव ।
येइ जपे, तार कृष्णे उपजये भाव ।।

यह हरे कृष्ण महामंत्र का स्वभाव है कि जो भी इसका जप करता है, उसके मन में तुरंत ही कृष्ण के प्रति प्रेम भाव उत्पन्न हो जाता है। (चैतन्य चरितामृत आदिलीला ७.८३)

प्रभु कहे, "याँर मुखे शुनि एकबार ।
कृष्णनाम, सेइ पूज्य, श्रेष्ठ सबाकार" ।।

जो भी व्यक्ति कृष्ण नाम का एक बार भी उच्चारण करता है वह पूज्य है तथा सर्वोच्च मानव है। (चैतन्य चरितामृत मध्यलीला १५.१०६)

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।

कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ।।

इस कलियुग में आध्यात्मिक उन्नति के लिए हरिनाम, हरिनाम और हरिनाम के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है, नहीं है, नहीं है। (बहन्नारदीय पुराण ३.८.१२६)

नामेकं यस्य वाचि स्मरणपथगतं श्रोत्रमूलं गतं वा

शुद्धं वाशुद्धवर्णं व्यवहितरहितं तारयत्येव सत्यम् ।

तच्चेद्देहद्रविणजनतालोभपाषण्डमध्ये ।

निक्षिप्तं स्यान्न फलजनकं शीघ्रमेवात्र विप्र ।।६०।।

यदि भक्त एक बार भी भगवन्नाम का उच्चारण करता है अथवा यह उसके मन में या कान में प्रवेश करता है तो यह पवित्र नाम निश्चय ही उसे भव बंधन से उबार लेगा चाहे नाम उच्चारण सही ढंग से किया गया हो या गलत ढंग से किया गया हो, चाहे मिलाकर अथवा अलग अलग खंडों में किया गया हो। (चैतन्य चरितामृत अंत्यलीला ३.६०)

द्वात्रिंशदक्षरं मंत्रं नामषोडशकान्वितम् ।

प्रजपन् वैष्णवो नित्यं राधाकृष्णस्थलं लभेत् ।।

सोलह नामों से युक्त, बत्तीस अक्षरवाले, ''हरे कृष्ण'' इत्यादि ''महामंत्र'' को नित्य जप करने वाला वैष्णव, श्री राधाकृष्ण के गोलोक वृन्दावनधाम को प्राप्त कर लेता है। (पद्म पुराण)

जिह्वा न वक्ति भगवद्गुणनामधेयं ।

चेतश्च न स्मरति तच्चरणारविन्दम् ।

यमराज का अपने यमदूतो को आदेश– " हे मेरे प्यारे सेवकों! तुम लोग केवल उन्हीं पापी पुरुषों को मेरे पास लाना जिनकी जीभ कृष्ण के नाम तथा गुणों का कीर्तन नहीं करती, जिनके हृदय कृष्ण के चरणकमलों का एक बार भी स्मरण नही करते।" (श्रीमद् भागवतम् ६.३.२९)

कृष्णेति मंगलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते ।

भस्मी भवन्ति राजेन्द्र महापातककोटयः ।।

हे राजेन्द्र! यह शब्द 'कृष्ण' इतना मंगलमयी है कि जो भी इस नाम का उच्चारण करता है, वह जन्म जन्मांतर के कोटि कोटि पापों के फल से तत्काल मुक्त हो जाता है। (विष्णु धर्म पुराण)

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्तिते सर्वपातकैः ।

पुमान विमुच्यते सद्यः सिंहत्रस्तैर्मृगैरिव ।।

यदि कोई असहाय अवस्था में या अनिच्छा से ही, भगवन्नाम का उच्चारण करे तो उसके पापमय जीवन के सारे फल उसी तरह मिट जाते हैं, जिस तरह सिंह की दहाड़ से सारे छोटे–छोटे पशु डर कर भाग जाते हैं। (गरुड़ पुराण)

संकीर्तनध्वनिं श्रुत्वा ये च नृत्यन्तिमानवाः ।

तेषां पादरजस्पर्शान्सद्यः पूता वसुन्धरा ।।

'जो भगवन्नाम की ध्वनि को सुनकर प्रेम में तन्मय होकर नृत्य करते हैं, उनकी चरणरज से पृथ्वी शीघ्र ही पवित्र हो जाती है। (बहन्नारदीय पुराण)

बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं ।

'जो विवश होकर भी नाम–जप करते हैं उनके अनेक जन्मों की कमाई हुई समस्त पाप राशि को हर लेता है।' (श्रीरामचरित.बा.का.११८/२)

नारायणो नाम नरो नराणां प्रसिद्धचौरः कथितः पृथिव्याम् ।
अनेकजन्मार्जितपापसंचयं हरत्यशेषं श्रुतमात्र एव ।।

इस पृथ्वी पर नारायण नामक एक नर प्रसिद्ध चोर बताया गया है, जिसका नाम और यश कानों में प्रवेश करते ही मनुष्यों की अनेकजन्मों की कमाई हुई समस्त पाप राशि को हर लेता है। (वामन पुराण)

अंहः संहरद् अखिलं सकृद् उद्याद् एक सकल लोकस्य ।

तरणिर इव तिमिर–जलधिं जयति जगन्मंगलं हरेर नाम ।।

जिस प्रकार सूर्य उदित होकर अंधकार का विनाश करता है, उसी प्रकार भगवान् का पवित्र नाम यदि बिना किसी अपराध के एकबार भी जपा जाए,तो जीव के समस्त पापों का नाश कर देता है। (पद्मावली १६)

नामेर अश्रर–सबेर एइ त' स्वभाव ।

व्यवहित हैले ना छाड़े आपन–प्रभाव ।।

पवित्र नाम के अक्षरों की इतनी आध्यात्मिक शक्ति है कि ठीक से उच्चारित न होने पर भी अपना प्रभाव दिखाते हैं। (चैतन्य चरितामृत अन्त्यलीला ३.५९)

यदभ्यर्च्य हरिं भक्त्या कृते क्रतुशतैरपि ।

कलं प्राप्नोत्यविकलं कलौ गोविन्दकीर्त्तनम् ।।

सत्ययुग में श्रद्धा पूर्वक सैकड़ों यज्ञ आदि के द्वारा जो फल लाभ होता है, कलिकाल में श्री गोविन्द के नाम कीर्तन द्वारा वे समस्त फल पाए जा सकते हैं। (विष्णु रहस्य)

नाम्नो हि यावती शक्तिः पाप निर्हरिणे हरेः ।
तावत् कर्तुं न शक्नोति पातकम् पातकी नरः ।।

हरि का एकमात्र नाम उच्चारण करने से पापी मनुष्य जितने पाप करता है उससे भी अधिक पापों के फलों का निवारण करता है। (बृहद विष्णु पुराण)

नाहं तिष्ठामि वैकुण्ठे योगिनां हृदयेन वा ।
मद् भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामी नारदः ।।

हे नारद! ना तो मैं वैकुण्ठ में हूँ, ना मैं योगियों के हृदय में रहता हूँ। मैं तो उस स्थान में वास करता हूँ जहाँ मेरे भक्त मेरी लीलाओं की महिमा का गान करते हैं। (पद्म पुराण)

नाम विनु कलिकाले नाहि आर धर्म ।
सर्वमंत्रसार नाम एइ शास्त्र मर्म ।।

इस कलियुग में भगवन्नाम के कीर्तन से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं है,क्योंकि यह समस्त वैदिक स्त्रोतों का सार है। यही सारे शास्त्रों का तात्पर्य है।(चैतन्य चरितामृत आदिलीला ७.७४)

श्रृण्वतां गृणतां वीर्याण्युद्दामानि हरेर्मुहुः ।
यथा सुजातया भक्त्या शुद्ध्येन्नात्मा व्रतादिभिः ।।

जो व्यक्ति भगवन्नाम का निरंतर श्रवण तथा कीर्तन करता है और भगवान् के कार्यों का श्रवण तथा कीर्तन करता है वह बहुत ही आसानी से शुद्ध भक्ति पद को प्राप्त कर सकता है, जो उसके हृदय के मैल को शुद्ध करनेवाला है। केवल व्रत रखने तथा वैदिक कर्मकाण्ड करने से ऐसी शुद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती। (श्रीमद् भागवतम् ६.३.३२)

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते ।
सम्प्राप्ते सन्निहिते काले नहि नहि रक्षति डुकृङ्करणे ।।

अरे मूर्खों! (मूढ़मति) केवल श्री गोविन्द का भजन करो, केवल श्री गोविन्द का भजन करो, केवल श्री गोविन्द का भजन करो। तुम्हारा व्याकरण का ज्ञान एवं शब्द चातुरी मृत्यु के समय तुम्हारी रक्षा नहीं कर पाएगी। (आदि गुरु शंकराचार्य)

आपन्नः संसृतिं घोरां यन्नाम विवशो गृणन् ।
ततः सद्यो विमुच्येत यद्बिभेति स्वयं भयम् ।।

जन्म तथा मृत्यु के जाल में फँसे हुए जीव, यदि अनजाने में भी श्रीकृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण करते हैं तो तुरंत मुक्त हो जाते हैं क्योंकि साक्षात् भय भी भगवन्नाम से भयभीत रहता है। (श्रीमद् भागवतम् १.१.१४)

अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान्,
यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम्।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या
ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते।।

ओह! वे कितने धन्य हैं, जिनकी जिह्वाएँ आपके पवित्र नाम का जप करती है! कुत्ता खाने वाले वंशों में उत्पन्न होते हुए भी ऐसे पुरुष पूज्यनीय है। जो लोग आपके पवित्र नाम का जप करते हैं, उन्होंने सभी प्रकार की तपस्याएँ तथा हवन किये होंगे और आर्यों के सदाचार प्राप्त किये होंगे। आपके पवित्र नाम का जप करते रहने के लिए उन्होंने तीर्थ स्थानों में स्नान किया होगा, वेदों का अध्ययन किया होगा और अपेक्षित हर वस्तु की पूर्ति की होगी। (श्रीमद् भागवतम् ३.३३.७)

Follow us for...

HG Shri Madhusudan Bapuji Lectures

ANDROID APP ON Google play Shri Madhusudan Bapuji

Shri Madhusudan Bapuji

Shri Madhusudan Bapuji

You Tube Anand Vrindavan Dham

www.anandvrindavan.com

+91-9112369000 / +91-9130553366

Printed & Published by: Shri Madhusudan Bapuji Ashram, Anand Vrindavan Dham, Ulhasnagar, India.